'जनसीदन'क उपन्यास द्विरागम रहस्य

—डा० रामदेव झा

जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिली उपन्यास साहित्यक आधार-स्तम्भ थिकाह। मैथिली-साहित्यमे उपन्यास विधाक प्रवर्त्तन हिनकहिसँ भेल। हिनक पहिल उपन्यास 'सतीसर्वस्व' मिथिला मिहिरमे १९१२ मे प्रकाशित भेल छल। मिथिला-मिहिरहिमे हिनक अग्रिम उपन्यास [illegible] 'निर्दयी सासु' (१९१४) ओ 'शशिकला' (१९१५-१६) प्रकाशित भेल। १९२६मे 'पुनर्विवाह' मधुबनीसँ पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेल छल। हिनक पाँचम उपन्यास 'द्विरागम रहस्य' मिथिला-मिहिरमे १९४५-४६ (७.७.१९४५ सँ १६.२.१९४६ पर्यन्त) मे प्रकाशित भेल छल। भ्रमवश कतोक समालोचक एकर नाम 'द्विरागमन रहस्य' कहि दैत छथि।

'द्विरागम रहस्य'क प्रकाशन विलम्बसँ भेल, यद्यपि एकर रचना बहुत पूर्वहि भए चुकल छल। एहि बातक संकेत उपन्यासहिमे भेटि जाइत अछि। 'द्विरागम रहस्य'क नायिका कलावतीक पिता भलमानुष भोलठाकुर घटक भिखारी झाकें कहैत छथिन— 'दू सय टाका त हम समागाछीमे दू वंशक वरसँ लेबैन्ह, एखन हमरा कन्या-दान करब तादृश आवश्यको नहि अछि। शारदा बिल पास होएबासँ पूर्वहि हम कन्यादान कै लेब।'

एहिसँ सहजहि सिद्ध होइत अछि जे 'द्विरागम रहस्य' उपन्यासक रचना बाल-विवाह-निरोधक 'शारदा बिल'क कानून बनबासँ बहुत पूर्वहि भए चुकल छल। पास होयबासँ पूर्व एहि बिलक बेश चर्चा ओ घनघोर विरोध भेल छल आ मिथिलामे हजारो अबोध कन्याक विवाह कराओल गेल छल। शारदा बिल १० सितम्बर १९२९ कें पास भेल आ अप्रैल, १९३० मे कानूनक रूपमे लागू भए गेल छल। पूर्वोद्धृत उक्तिक आधार पर अनुमान होइछ जे 'द्विरागम रहस्य'क रचना 'पुनर्विवाह'क पश्चात किन्तु शारदा बिलक पास होयबासँ पूर्व १९२८ ओ १९२९क मध्य अवधिमे भए गेल छल।

अतः 'द्विरागम रहस्य' जनार्दन झा 'जनसीदन'क अन्तिम उपन्यास थिकनि। एहि उपन्यासक कथानक विवाहसँ लए द्विरागमन धरिक घटनाक विभिन्न परिस्थितिकें, विभिन्न प्रक्रिया ओ व्यवहारकें समेटने अछि। पूर्वक उपन्यासमे लेखक एहि प्रसंगक जाहि जाहि अंशक वर्णन नहि कए सकल छलाह तकरा एहि उपन्यासमे विस्तृत रूपमे देबाक सफल प्रयत्न कयने छथि।

कथा आरम्भ होइत अछि एकटा विधवा माय द्वारा अपन जेठ पुत्रकें विवाह करबाक आग्रह सँ। माय-बेटाक विस्तृत वार्त्तालापसँ पूर्व घटित घटना ओ परिवारक विस्तृत परिचय पाठककें देल जाइत अछि।

एहि वार्त्तालापसँ जानल जाइत अछि जे बुद्धिनाथ पाठक ज्योतिषक अद्वितीय विद्वान छलाह। कलकत्तामे रहि ज्योतिषीक व्यवसायसँ नीक आस्था-पात अर्जित कयने छलाह। हुनक आकस्मिक देहावसान भए गेलनि। परिवारमे छथिन विधवा पत्नी विराजमानि, तीन गोट बालक महावीर, मनोहर ओ मुकुन्द, एकटा कन्या सुधा जनिक कन्या-दान भए गेल छनि, किन्तु द्विरागमन नहि भेलनि अछि। जमाय शशिकान्त झा काशीमे व्याकरणक आचार्यमे परीक्षा दए उत्तीर्ण भेल छथिन।

महावीरकें पढ़बामे मोन   नहि लगलनि तें किछु हिन्दी ओ लघु सिद्धान्त कौमुदी पढ़ि पढ़ब छोड़ि देलनि। आब अपसोच होइत छनि जे ओहो ज्योतिष पढ़ने रहितथि तँ पिताक स्थानापन्न कलकत्तामे पुजबैत रहितथि। मनोहर ओ मुकुन्दकें संस्कृत-शिक्षाक प्रति अभिरुचि नहि छनि। ओ अंगरेजी शिक्षाक पक्षपाती छथि। मनोहर आ मुकुन्द शिक्षाक सम्बन्धमे कहने छलथिन जे— 'संस्कृतमे आब की बाँचल छैक। संस्कृत पण्डितकें आब के पुछै छैन्ह? तीन-चारि शास्त्रक आचार्य कै प्रिन्सिपल भेलो पर संस्कृत विद्यालयमे ५०) ६०) मासिक वेतन भेटैत छैन्ह। हम दुहू भाइ अंगरेजिये पढ़ब, अंगरेजी स्कूलमे नाम लिखा दिय। विदेशी विद्वान् जे केवल संस्कृत व्याकरण मात्र जनैत छथि, हुनक विलायतमे सम्मान पुरस्सर एक हजार टाकासँ

कम मासिक नहि भेटैत छैन्हि। विदेशी विद्वानक आदर एहू देशमे पूर्ण रूपेँ होइत छैन्हि। परन्तु देशी विद्वानक दिसमे केओ दृक्पातो आब नहि करैत अछि। बाड़ीक पटुआ तीत।'

तेँ मनोहर ओ मुकुन्द मधेपुरक अंगरेजी स्कूलमे पढ़ैत छथिन। महावीरक पिता कलकत्तामे रहि सैकड़ो टाका मासिक कमाइत छलथिन। ओहिसँ बेस जमीन-जथा अरजने छलथिन। पिताक संचित तीन हजार टाका छलनि से हुनकाहि श्राद्धादिमे खर्च भऽ गेल छलनि। हाथ पर किछु मात्र टाका महावीरकेँ बचल छलनि।

माय जखन महावीरकेँ विवाह कऽ लेबाक प्रस्ताव करैत छथिनतँ महावीर आर्थिक समस्याक विवरण देबऽ लगैत छथिन। महावीर छथि शुद्ध जयवार। उच्च जाति-पाँजिमे विवाह होइ हुनक ओ हुनक मायोक प्रबल आकांक्षा छलनि। योग्य ओ पँजीबद्धमे तँ नहिएँ, दू-तीनहु वंशक कन्यामे जँ विवाह करथि तँ कन्याक व्यवस्था देबामे, विधि-व्यवहारमे ओ सामे वर्षे द्विरागमन करयबामे आ अपन बहीन सुधाक द्विरागमनमे पाँच सय सँ कम खर्च नहि होइतनि। अढ़ाइ बिघा ब्रह्मोत्तर, पाँच बिघा मौरूसी ओ पिताक कीनल दस बिघा - कुल साढ़े सतरह बिघासँ परिवारक भरण-पोषण होइत छनि। ओहो जँ बचिए लेताह तँ परिवार कोना चलतनि।

माय सुझाव दैत छथिन जे खेत किएक बेचबह एक बिघा खेत तीन सयमे भरना राखि लैह, एक सय हमरा हाथ पर अछि, शेष एक सयमे हमर सोनक सूति बन्हकी राखि काज चलाबह। महावीरकेँ अपनहु दू सय टाका हाथ पर छलनि। अतः ओ विवाह हेतु सहमत होइत छथि।

विराजमनि अपन पतिक मित्र ओही गामक घटक भिखारी झाकेँ बजबाय महावीरकेँ नीक वंशक कन्यामे विवाह करबा देबाक प्रस्ताव दैत छथिन। घटक भिखारी झाकेँ कुसुमपुरक भलमानुष भोलठाकुरक कन्याक कथाक प्रस्ताव पूर्वहि सँ जानल छलनि। भिखारी झा महावीरक हेतु उपयुक्त कथा बुझि ओहि दिस प्रयत्नशील होइत छथि।

भोलठाकुरकेँ वर-घर गुणक वर्णन करैत महावीरक ओहि ठाम कथा करबाक विचार दैत छथिन। जयवारक नाम सुनितहु भलमानुष भोलठाकुर चुप भऽ जाइत छथि। भिखारी झा द्वारा बहुत बुझौला पर ओ पिउसि परेखमनिकेँ सब बात बजबाय कहैत छथिन।

पिउसि अनुभवी आ व्यावहारिक बुद्धि वाली बूढ़ महिला छथि। ओ कहैत छथिन - 'वर, वरगुन नीक छैन्हि। सुरखी छथि। प्रसिद्ध ज्योतिषी बुद्धिनाथ झाक बालक छिकाह। क्रिया-मर्यादावला घर छैक। करबामे क्षति की? कन्या सुखमे रहति। लगमे ई काज होइत अछि। एकटा दाइनिओकेँ पठा क कुशल-क्षेम बुझबा मंगाएब। वंशक लोक बहुत भेटत परञ्च सिआतिगर नहि भेटत। दरिद्रक घरमे कन्याकेँ कोन सुख भेटतैक! जाति लै क की धो धो चाटब! हम तँ पँजिबद्धहिक घरमे देलि गेलि छलहुँ। आइ अहाँक द्वारि अगोरने छी। आब समय बदलल जा रहल छैक। कन्याकेँ सुयोग्य वरक हाथमे देबक चाही। आब लोक केवल विद्या और धन देखि काज करैत अछि। जातिक दिस जे लोकक धारणा पहिने छलैक से क्रम क्रमसँ आब उठल जा रहल छैक।'

घटक भिखारीझाक तर्क ओ चिन्तनक विचारसँ प्रभावित भऽ भोलठाकुर जयवारमे कथा करबासँ सहमत होइत छलाह। परन्तु तीन सय टाकासँ कम व्यवस्था स्वीकार नहि होइत छलनि। भिखारी झा दू सय दिआ देबाक वचन दैत बुझबैत छलाह जे 'तीनवंशक वरमे कथा करब सेहो २०० टाकासँ अधिक नहि देत। हँ, जँ मूर्ख हैत, घरक दरिद्र हैत से खेतो बेचि क ३०० टाका दऽ देत। परन्तु ओहेना वरमे कन्याकेँ देने आजीवन पछताइत रहब। अहाँ तँ अपन लोक छी। जाहिमे अहाँक नीक होएत, हम सैह करब। चिन्तनक विचार बड़ उत्तम छैन्ह। तखन कन्या अहाँक थीक। जँ अहाँकेँ इ कथा पसिन्द नहि हो तँ अन्यत्र जतय पसिन्द हो, ओतहि करब। कन्या तँ शर्तवरा होइत अछि। कथा अनेको ठाम होइत छैक परन्तु इयतैक तँ कतहु एके ठाम।'

कथा गड़बड़ाइत देखि भोलठाकुर गप्पकेँ आगाँ बढ़बैत छथि। ओ घर-वर अपना आँखिसँ देखि कथा करबाक हेतु सहमत होइत छथि।

भिखारीझा ओतऽ सँ आबि विराजमानिकेँ कथाक प्रगति सूचित करैत छथिन। कन्यागत कोनो दिन घर-वर देखबाक हेतु अओथिन सेहो कहैत छथिन।

एकदिन भोलठाकुर अपन पिसिऔत भाइ भैरवझा ओ एक बहियाक संग सन्ध्याकाल मदनपुर पहुँचैत छथि। मदनपुरमे महावीर कन्यागतकेँ देखि आङन चल जाइत छथि। मनोहर ओ मुकुन्द हुनका लोकनिक विनम्रता पूर्वक स्वागत-सत्कार करैत छथिन। मुकुन्द भिखारी झाकेँ बजा अनैत छथि।

भोलठाकुर महावीरकेँ बजाय परिचय पात पुछैत छथिन। घर-वर देखि सन्तुष्ट होइत छथि। कन्यागत लोकनिक हेतु असिद्ध भोजनक बृहत विन्यास पूर्वक व्यवस्था होइत छनि। सब भोजन कऽ विश्राम करैत छथि। दोसर दिन कथा-निश्चय करबाक प्रक्रिया होइत अछि। भिखारीझा विराजमानिसँ विचार करैत छथि। पुनः भिखारी झा भैरवझासँ एकान्ती करैत छथि। भैरव झा भोलठाकुरसँ एकान्तमे गप्प करैत छथि। भैरव झा महावीरक कथा करबाक हेतु कहैत छथिन — 'जगमे एहन सुखित घर भेटब कठिन। तेँ घटक एखन जे व्यवस्था देआ रहल छथि से मंजूर कय अगहनहिक शुद्धमे इ कार्य कै लिय।'

'व्यवस्था कतेक देआ रहल छथि?' भोलठाकुरक एहि प्रश्नक उत्तरमे भैरव झा कहैत छथिन — २००) टाका व्यवस्था, ५०) टाका चतुर्थीक हेतु आओर विवाहक राति जे विधि होइत छैक से पृथक।' एहि पर तैयार नहि होइत छथि भोलठाकुर। भैरव हुनका अनेक तरहेँ बुझबैत छथिन जे- 'टका दिश वा जाति दिश ध्यान नहि दिऔक। कन्याक सुखहु दिश दृष्टि देब उचित थीक। कन्याक माय जीवित नहि छैक। एहि घरमे एलासँ ओकरा कथुक दुःख नहि रहतैक।'

भोलठाकुर भैरवझाकेँ विवाहक खर्च जोड़बऽ लगैत छथिन— 'दू सय टाकामे जमायकेँ नीक जकाँ कोना विदा करबैन्हि? २ टाका रोज त हुनका भोजने करायबामे लागत। कदाचित भोट दै विदा नहि भेलाह त कमसँ कम १००) टाका भोजन जलपानमे उड़ि जाएत। कहुना १००) बाँचत। कपड़ा पर दाम बढ़ि गेल छैक। एतबामे अहाँ जे हुनका विदा कै सकिऐन्ह तँ अहाँ मानि लिऔन्ह। परञ्च हम अपना घरसँ एको टाका देब नहि। न्यून काज करब और घरक दको बरबाद करब, ई हमरा सँ नहि हैत। जातियो गमौलहुँ स्वादो ने पौलहुँ। एखन चमक-दमक देखैत छथिन्ह से कायम रहतैन्ह की नहि से के जानै। तीनू भाइ पढ़ल-लिखल एहने-ओहने छथि। यदि अहाँक पूर्ण विचार एहि कार्यमे हो तँ ५०) टाका और व्यवस्था देथु।'

भैरव झा ई बात हटकाकेँ कहैत छथिन। हटका विराजमनिसँ विचार पुछैत छथिन। विराजमनि १५) टाका मात्र और देबाक सहमति दैत छथिन, सेहो विदाइक रूपमे। भोलठाकुर ततमत करैत मुँह बिधुओने कथा मंजूर कए लैत छथि। अगहनमे कथाक दिन स्थिर भए जाइछ।

निश्चित तिथिकेँ विवाह सम्पन्न होइछ। दोसर दिन बरियातीक विदाकाल भोलठाकुर चतुर्थीक हेतु निर्धारित टाका मङैत छथिन। मनोहर स्वतःसँ ओहि पाँच गोट दसटकिया नोट दए दैत छथिन।

मदनपुरमे चतुर्थीक मार-दोर; सौंठ-राजक विस्तारसँ व्यवस्था कयल जाइत अछि। मार-दोर देखि मदनपुर ओ कुसुमपुर दुहू ठामक लोक चकित भए जाइत अछि।

अगहनक पूर्णिमाकेँ महावीरकेँ सासुरसँ विदा कयल जाइत छनि। नौतपुरिया लोकक संग वर-विदाइ लए महावीर ग्राम अबैत छथि। विधि-व्यवहार सम्पन्न होइछ।

महावीरक बहीन सुखाक विवाहक तेसर वर्ष छनि। बहिनोइ शशिकान्त झा बनारसमे व्याकरणक परीक्षा उत्तीर्ण भए ग्राम आयल रहैत छथिन। से शशिकान्त झा सासुर मदनपुर अबैत छथि। हुनक स्वागत सत्कार होइत छनि। शशिकान्त झा सुखाक द्विरागमनक दिनक प्रस्ताव करैत छथिन। शशिकान्तक मायक आग्रह विशेष छलनि। सुखाक द्विरागमन तेसर वर्षमे नहि भेला सँ पुनः आगाँ पाँचम वर्षक प्रतीक्षा करए पड़ितनि। सब परिस्थिति पर विचार कए वैशाखशुक्ल दशमीकेँ द्विरागमनक दिन निश्चित होइछ। शशिकान्तकेँ एक जोड़ धोती, एक रेशमी चादरि ओ पन्द्रह टाका विदाइ भेटैत छनि। नोकर केँ एकटा खण्ड धोती एक टाका भेटैत छैक। शशिकान्त प्रसन्नचित्त ग्राम आबि माय ललित-मनिकेँ ई सुखद संवाद कहैत छथिन। ललितमनिकेँ दुटा कन्या सत्यभामा ओ सुनन्दा छलथिन। दुहूक विवाह एकहि ग्राममे भेल छलनि। से ओहि दुहू बहिनिक विदागरीक दिन तकाय, दिन मनयबाक लेल आदमी पठबैत छथिन। दुहू बहीन मे एकटा भाइ, से भाइक द्विरागमनक संवाद ओ विदागरीक दिन जानि बड़ आह्लादित होइत छथि। ब्रजमोहन ओ शिवनाथ दुहू साढ़ू परस्पर विचार-विमर्श कए दिन मानि लैत छथिन आ निश्चय करैत छथि जे दुहू बहीन एके सवारीसँ अपन नैहर पिलखवाड़ जाथि। उक्त तिथिकेँ शशिकान्त अपनहि जाय दुनू बहीनिकेँ लेआओन करा अनैत छथिन

ऐमहर विराजमनि सुखाक दिन मानि लेलथिन तखन महा-वीर पशोपेशमे पड़ि जाइत छथि। हुनक विचार रहनि जे पहिने हमर द्विरागमन भए जाय तखन सुखाक द्विरागमन होइक। मायोक सेहु विचार छलनि। अतः सुखाक द्विरागमनक दिनसँ पूर्वहि दिन तकाय डोर सिन्दूर लए नौआकेँ कुसुमपुर पठाओल जाइछ। ओहि ठामसँ डोर सिन्दूर आपस भए जाइछ। तखन महावीर स्वयं दिन मनाबए जाइत छथि। सासुरमे अपन परिस्थिति कहि द्विरागमनक दिन मानि लेबाक आग्रह करैत छथिन। पिउसि परेखमनि एकरा पक्षमे विचार प्रकट करैत छथिन। परन्तु भोलठाकुर कोनो रूपेँ राजी नहि होइत छथिन। ओ अपन नाना तरहक व्यवधान सुनबए लगैत छथिन—'सोमे वर्षे द्विराग-मन देबामे हम अक्षम छी। अगहनमे विवाह और बैशाखमे द्विरागमन! एहिसँ उत्तम तँ होइतैन्ह, विवाहहिक यात्रामे

द्विरागमनो कय लितथि। हम दिन कदापि नहि मानि सकैत छियैन्ह। एहि वर्ष हम सब तरहेँ सिकस्त छी। तेसर वर्ष रौदी भ गेला सँ धानक फसिल मारल गेल। गत वर्ष बाढ़ि आबि गेलैक, सभ धान दहा गेल। हम मर्यादा वला लोक छी। खर्च रुकैवाला नहि। हम खर्च लोककैं कर्ज दै छलिऐक, से समय तेहन आबि गेल, अगत्या दू सय टाका हैन्डनोटपर कर्ज लेबय पड़ल। महाजन बीच-बीचमे एक-दू बेर तकादा कैलक। हम कहलिऐक, एखन हमरा सँ टाका नहि भ सकत। ओ खिसिआ क असल मे-सूद तीन सय कहएक टाकाक नालिशा कै देने अछि। एकतरफा डिग्री भ गेल छैक। आब इजराय कराओत। जेहो दू चारि बिग्हा खेत अछि सेहो नीलाम भ जाएत। साहय की?'

महावीर विचार दैत छथिन जे गामक सबसँ धनिक हरिनन्दनका सँ अपेक्षा अछि तेँ हुनका सँ हैन्डनोटपर दू सय टाका लए लेथि ओ एक सय हमहूँ देबनि। तीन सय टाका अदालतमे जमा कए देथि। भोल ठाकुर गद्गद भए जाइत छथि जे आधा काज तँ सिद्ध भेल, आब सोड़हो आना काज सिद्ध भए जाय।

महावीर श्वसुरक खेतक नीलामीसँ सोचमे पड़ि जाइत छथि। ओ कोनो प्रबन्ध कए हुनका चारिसय टाका देबाक निश्चय करैत छथि। श्वसुर कैं अपन मन्तव्य कहि गाम बिदा होइत छथि।

एहि यात्रामे महावीर अपन नवपरिणीता पत्नीकेँ बहुतरास नीति वचन कहि अपना अनुकूल कए लैत छथि। पति-पत्नीक प्रेमक सम्बन्धमे अनेको पौराणिक गल्प कहि ओ बालावतीक हृदयमे पतिभक्तिक बीज वपन कए सफल-प्रयत्न होइत छथि।

गाम आबि महावीर मायकेँ सब वृत्तान्त कहैत छथि। माय कहैत छथिन – '४००) टाका देलेक हुनक खेत नीलाम नहि होमै देबैन्ह। परञ्च पहिने बूझक चाहि जे कोन महाजन सँ ओ रुपैया कर्ज नेने छथि। कहिया हुनका पर नालिशा दायर भेलैन्ह, एहि सभ बातक पहिने गुप्त रीतिसँ पता लगा लिय तखन चारि-पाँच सय टाकाक प्रबन्ध हैब कोन भारी बात छैक।'

भोलठाकुर महावीरकेँ महाजनक नाम कहने छलथिन मधुबनीक मिठू साहु। विराजमनि मनोहरकेँ एकर पता लगाबए कहैत छथिन। मनोहरकेँ कैं मधुबनीमे मिठूसाहु नामक केओ महाजन नहि भेटैत छनि। तखन कचहरीमे जा कए पता लगबैत छथि। मुनसिफक सिरिश्तेदार ओ पेशकार कैं एक-एक टाका दए नालिशी मोकदमाक पता लगबैत छथि। ओ सब सिरिश्ता देखि कहैत छनि जे भोलठाकुरक उपर कोनो मोकदमा नहि भेल छनि।

मनोहर मायकेँ सूचित करैत छथिन। माय महावीरकेँ कहैत छथिन जे 'तोहर ससुर तोहरा सँ ठकि कै ४००) टाका लेबाक प्रपंच कैने छथुन। आब एक आत्मीयकेँ कुसुमपुर पठा क बूझक चाही जे की विषय छैक। कर्ज नेने हएताह तँ गामक लोक बूझनहि हएतैन्ह।'

महावीरक पिताक शिष्य यदुनाथझा ज्योतिषीकेँ बजाय विराजमनि हुनका भोलठाकुरक कर्ज-वर्जक सम्बन्धमे कुसुमपुर जाय पता लगाबए कहैत छथिन। यदुनाथझा कुसुमपुरसँ पता लगा कए अबैत छथि आ विराजमनिकेँ कहैत छथिन जे- महावीरक ससुरकेँ कोनो कर्ज नहि छनि। ओ गामक एकटा मसोमातकेँ ठकि-फुसिया कए दू बिग्हा खेत लिखबाबए चाहैत छथि। ओहि हेतु जमाय सँ चारिसय ठकए चाहैत छथि।

विराजमानिकेँ पूर्णरूपेँ विश्वास भऽ जाइत छलनि जे भोलठाकुर छली/कपटि छथि। एहना लोककेँ छकाएब चाही। बेटाकेँ ओ कहैत छथि— 'तोँ एक बेर फेर सासुर जाह, जेना होअ हुनका पुतोहु केँ आनि देह। तोहर ससुर छथुन्ह लोभी, ठक। हुनका रुपैयाक लोभ देबहुन तँ ओ वैशाखमे द्विरागमनक दिन अवश्ये मानि लेथुन्ह।'

महावीर मनोहरकेँ किछु बुझा-सुझा कऽ सासुर जाइत छथि। ससुरकेँ कहैत छथि जे एक सय टाका संगमे अननै छी आ तीन सय टाका लऽ कऽ मनोहर पूर्णिमा दिन औताह। भोलठाकुर मने मन अपन गोटी लाल बुझैत बड़ प्रसन्न होइत छथि।

महावीर रातिमे अपना संग आनल रेशमी साड़ी, सोनक टूटा गहना, चानी काड़ा कलावतीकेँ दैत छथिन। कलावती बड़ आनन्दित होइत छथि। महावीर कलावतीसँ अनेक प्रकारक वार्तालाप करैत हुनक मनक थाह लैत छथि। कलावती अनेक प्रकारेँ महावीरकेँ विश्वास दिअबैत छथि जे हम सतत अहाँक अनुगामिनी ओ आज्ञाकारिणी रहब। महावीर एहि पर कहैत छथिन जे 'काल्हि हम परीक्षा लेब। हमर बात मानब तखन हम बुझब जे अहाँ अवश्य सत्यभाषिणी छी।' महावीरकेँ कलावतीक वचन ओ मनोदशासँ विश्वास भऽ जाइत छलनि जे कलावती हुनकासँ कहियो अन्यथा नहि कऽ सकैत छथिन ने आज्ञाक उल्लंघन करथिन।

प्रात भेने चैतक पूर्णिमा रहैत छैक। गामक धनाढ्य हरिनन्दन झाक ओतऽ सत्यदेवक पूजामे भोलठाकुरकेँ सबजना नोत-हकार रहैत छलनि। महावीर परखमानि पिउसिसँ कहि कलावतीकेँ ओहि आङन जयबासँ मुक्त करा लैत छथि। तखन अपन बिलटा खवासकेँ मनोहरक नाओं पत्र लीखि गाम पठबैत छथि आ उतारा लऽ कऽ आइए आबऽ कहैत छथि। सूर्यास्तसँ दू घड़ी पूर्व बिलटा उतारा लऽ कऽ आबि जाइछ। आब महावीर मनोहरक अएबाक बाट ताकऽ लगैत छथि। भोलठाकुर सहित हुनक आङनक ओ टोलक अधिकांश स्त्री-पुरुष हकार पूरऽ हरिनन्दन बाबूक ओतऽ चल जाइछ। केवल कलावती रहि जाइत छथि।

गामक दक्षिण एकटा पुरैनदहा पोखरि छैक, एकदम निर्जन। महावीर बिलटाकेँ ओही पोखरिक घाट पर जा कऽ बैसऽ कहैत छथिन। दू घड़ी राति बितला पर मनोहर ओ धर्मनाथ बाबू महफा-कहार लेने पोखरि पर पहुँचैत छथि। बिलटा ई खबरि महावीरकेँ पहुँचबैत छनि।

महावीर कलावतीकेँ अपन आनल साड़ी-गहना झटसँ पहिरि कलम बाग धरि चलऽ कहैत छथिन। कलावती तहिना कऽ कुलदेवताकेँ प्रणाम कऽ केबाड़मे बाहरसँ ताला लगाय कुंजी चक्का पर राखि महावीरक पाछाँ चलि दैत छथि। टोल तँ लोकसँ शून्य छल तेँ केओ देखैत नहि छलनि। सड़क पर महफा राखल देखि महावीर कलावतीकेँ ओहिमे चढ़ि जाय कहैत छथिन। महावीरक आज्ञा मानि कलावती महफामे चढ़ि जाइत छथि। महफा चलि पड़ैछ। महावीर मनोहरक साइकिल लऽ कऽ महफाक संग चलैत छथि। मनोहर, धर्मनाथ बाबू ओ बिलटा दोसर बाट धऽ गाम विदा होइत छथि।

गाम पर विराजमानि द्वार पर बैसि बाट तकैत छथि। महफा सहित महावीरक अएला पर चुपेचाप बर-कनियाँक चुमाओन कऽ घर लऽ जाइत छथि। प्रात भेने एहि द्विरागमनक समाचार टोलक लोक बुझैत अछि।

ओम्हर भोलठाकुर सपरिवार हरिद्वार घूमि अबैत छथि तँ घरमे ताला लागल देखैत छथि। बेटी आ जमाय निपत्ता। पड़ोसी कलावतीकेँ नाम धऽ कऽ सोर करैत छथि। चक्कापर कुँजी भेटैत छनि। घर खोलल जाइत अछि। जयदेव लालटेम लऽ कऽ बहीन केँ घरे घरे तकैत छथि मुदा केओ कतहु नहि भेटैत छनि। कन्या-जमाय दुहू चुपचाप पड़ाय गेलाह, की जमाय कलावतीकेँ परतारि कऽ कतहु लऽ गेलाह से गुनधुन करैत भोलठाकुर क्षुब्ध भऽ उठैत छथि। मर्यादाहानि ओ अपमानक अनुभव कऽ क्रोधित होइत जमायक निन्दाक कथा बजैत छथि। परन्तु दोसर दिन, बेटी-जमाय पड़ाय मदनपुरे गेलथिन वा अन्यत्र, तकर सत्यापन हेतु [illegible] जयदेवकेँ सत्यदेव भगवानक प्रसाद पहुँचयबाक लाथेँ मदनपुर पठबैत छथिन। जयदेवक मदनपुरसँ आपस अयला पर सन्देहक निवारण होइत छनि। ओ अनुभव करैत छथि जे 'जमाय हमरा खूब ठकौलनि।'

महावीर तीनू भाइ आब अपन बहीन सुधाक द्विरागमनक इन्तजाममे लागि जाइत छथि। विराजमनि बेटीकेँ देबाक हेतु साँठ-राज, धोती-पटोर, गहना-गुड़िया सैंतऽ-समहारऽ लगैत छथि। वैशाख शुक्ल नवमीकेँ बरियाती-खवासी, महफा-कहारक संग शशिकान्त झा मदनपुर अबैत छथि। हुनक स्वागत-सत्कार, विधि-व्यवहार होइछ। दोसर दिन सुधाक द्विरागमन होइत छनि। मुकुन्द संग जाइत छथिन। विराजमनि अपन कन्याक ओ महावीर अपन बहीनक जेहन विदाइ करैत छथि से प्रायः धनिकोसँ होयब संभव नहि। सुधाक सासुरमे शशिकान्त-सुधाकेँ देल गेल दान-दहेज, वस्तु-जातक बड़ प्रशंसा होइछ।

सुधाक सासुरमे महावीरक ससुर भोलठाकुरक वृत्तान्त ओ महावीर द्वारा गुप्तरूपेँ कनियाँकेँ अपन गाम लऽ अनबाक बड़ चर्चा होइछ। मुकुन्द ओ शशिकान्त एकर यावन्तो वृत्तान्त कहैत छथिन तँ लोक कौतूहल ओ रस लऽ लऽ सुनैत अछि आ कहैत अछि- 'एहना ससुरकेँ एही तरहें छकैबाक चाही।'

सत्यभामा आ सुनन्दा अपना भाउजिकेँ कौखन कऽ परिहासमे कहैत छथिन- अहाँ सँ भेट कराबक हेतु अहाँक भाइ चोर जकाँ कनियाँकेँ चुपचाप मदनपुर लऽ अनलनि। बहिनिक प्रति भाइक एहन प्रेम होयब, बहिनिक एहि तरहें मनोरथ पुरायब कीसब सँ भऽ सकैत छैक?'

सुधा सुनि कऽ केवल मुसका दैत छथि।

एही ठाम उपन्यास समाप्त भऽ जाइत अछि।

'द्विरागमन' एकटा रूढ़ शब्द थिक जकर अर्थ होइछ नवपरिणीता कन्याक प्रथमबेर सासुर जायब जकरा पाछाँ परम्परित परिपाटी, लोकाचार ओ विविध विधि-व्यवहारक अर्थ सेहो समाविष्ट अछि। सब नवपरिणीता कन्याकेँ एकर मनोरथ रहैत छैक। किन्तु यदि कनियाँ सोझे सासुर चल आबय तँ ओकरा द्विरागमन नहि कहल जा सकैछ, द्विरागम भने कहि देल जाय। जनार्दनझाक एहि उपन्यासमे अन्ततः येह देखाओल गेल अछि।

'द्विरागम रहस्य' उपन्यासमे वास्तवमे दुइ गोट द्विरागमनक कथा कहल गेल अछि, जकरा माध्यमसँ दुइ प्रकारक सामाजिक परिवेशक श्रेय-हेय स्वरूपक समानान्तर वर्णन कयल गेल अछि। एकटा अछि, जातिमे उच्च, कुलीनता आ मर्यादाक पाखण्डसँ आवृत भलमानुष भोलठाकुरक कन्या कलावतीक ओ दोसर अछि, जातीय श्रेणी-विभागमे सबसँ न्यून, सब दिनसँ सामाजिक स्तर पर तिरस्कृत-उपेक्षित शूद्र जयवार वर्गक महावीरक बहीन सुधाक। दुहू कोटिक द्विरागमनक विन्यस्त वर्णन कऽ दुहूक तुलनात्मक दृष्टिएँ श्रेय ओ हेय होयबाक निर्णय करबाक दायित्व पाठके पर छोड़ि देल जाइत अछि।

द्विरागमनक जे अर्थ, जे परम्परा रहल अछि, तदनुरूप कलावतीक द्विरागमन नहि होइछ। पिता भोलठाकुरक धूर्तता, ठकपनी ओ फरेबसँ जमायसँ टाका ठकबाक प्रवृत्तिक कारणे मातृहीना कलावतीकेँ महावीर

द्वारा ओर जकाँ रहस्य-पूर्वक नैहर सँ सासुर आनल जाइछ। सासुरमे कलावतीक द्विरागमन नहि, आगम मात्र होइछ। सेहो रहस्यमय रीति सँ। तेँ उपन्यासक नाम 'द्विरागम रहस्य' सार्थक ओ समीचीन लगैत अछि।

'द्विरागम रहस्य'क कथा-फलक पूर्वक उपन्यासक अपेक्षा किछु विस्तृत देखल जाइत अछि। यद्यपि एकरहु परिवेश पारिवारिके थारि सीमित अछि, तथापि विभिन्न ग्रामक अनेक परिवारक घटनाकेँ मुख्य कथाक संग कौशलपूर्वक जोड़ल गेल अछि। मुख्य कथा थिक मदनपुरक महावीरक, कुसुमपुरक मोलहाकुरक कन्या कलावती सँ विवाह ओ द्विरागमन, परन्तु पिलखवाड़क शशिकान्त झा-ललितरानीक परिवार, तरौनीक सत्यभामा-ब्रजमोहनक ओ सुनन्दा-शिवनाथक परिवारक घटनाक संग्रथन सँ कथानकमे ओ संयोजन संभव भेल अछि मुख्य कथाक समपोषक प्रासंगिक कथाक संयोजन संभव भेल अछि। कथानकक जे उपन्यासमे विविधता ओ रोचकताक सृष्टि करैत अछि जे निरन्तर पाठकक विकास एहि उपन्यासमे वक्रगति सँ होइत अछि। उपन्यासक चरमबिन्दु तखन अबैत औत्सुक्यकेँ जगौने रहैत अछि। उपन्यासक चरमबिन्दु तखन अबैत अछि जखन महावीर सासुर सँ कलावतीकेँ महफामे चढ़ौने गाम अबैत छथि आ माय विराजमानिक पैर छूबि प्रणाम कऽ कहैत छथिन—"अहाँक आशीर्वाद सँ सभ कार्य निर्विघ्न सिद्ध भेल। पुतहुकेँ आनि देलहुँ।" एहि बिन्दु धरि पहुँचबाक हेतु पाठकक उत्सुकता जाग्रत रहैत अछि। एकर बादक घटना सभ वास्तवमे कथानकक समावर्तनक रूपमे योजित भेल अछि। महावीर-कलावतीक गुप्त रूप सँ पलायनक पश्चात् मोलहाकुर सन कन्याक पिताक मोलहाकुरक प्रतिक्रिया ओ क्रोध सर्वथा स्वाभाविक अछि। एहि सँ पाठककेँ कौतूहल मिश्रित सान्त्वना भेटैत छैक। अन्तमे सुवाक सादगी ओ विन्यस्त द्विरागमनक आयोजन कऽ लेखक पाठककेँ कलावतीक द्विरागम(न)क संग तुलना करबाक अवसर प्रदान करैत छथि।

'द्विरागम रहस्य' मे पुरुष ओ स्त्री पात्रक संख्या अधिक अछि अवश्य परन्तु ओहिमे किछुए पात्र सफल चरित्र अधिक व्यंजित भऽ सकल अछि, शेष पात्र गौण रहि जाइत अछि। परन्तु जे पात्र मुख्यतः सकल अछि तकर चरित्र-चित्रणमे लेखक अत्यन्त सजग छथि। पात्रक अपन आचरण, अपन कथन, अन्य पात्रक उक्ति ओ लेखकीय वर्णन द्वारा पात्रक व्यक्तित्वकेँ उरेहबाक प्रयास कयल गेल अछि।

पुरुष पात्रमे मोलहाकुर कथानकक विपरीत ध्रुव थिकथि जे ओहि वर्गक प्रतीक-पुरुष छथि जे जातीय उच्चता, कुलीनता ओ मर्यादाक पाखण्डपूर्ण परम्पराक दोहन करैत कन्या-विक्रय, जमाय सन कुकर्मो सँ शठता ओ धूर्तता पूर्ण आचरण करबामे संकोच नहि करैत छथि। मिरवारी मा घटकामे युगानुरूप वैचारिक गतिशीलता देखि पड़ैत अछि। महावीर आज्ञाकारी पुत्र, बुधियार ओ संवेदनशील छथि परन्तु सहृदयताक कारण ससुरक धूर्त परणाकेँ परेखबामे असफल रहैत छथि। महावीरक माइ मनोहर चंचल प्रकृतिक अछि तथापि अछि तीव्रबुद्धि ओ कार्यपटु। महावीरक माय विराजमानिक व्यक्तित्व सभ सँ विशिष्ट

नारी पात्रमे महावीरक माय विराजमानिक व्यक्तित्व सभ सँ विशिष्ट अछि। ओ उपन्यासक समग्र घटना-चक्रक धुरी छथि। उपन्यासक समग्र कथानकसूत्रधार विराजमानि सन वितपन्न, व्यावहारिक, बुद्धिमती, चतुर ओ शठताक समीचीन उत्तर देनिहारि नारी पात्र अपन समय ओ सामाजिक परिस्थितिक दृष्टिएँ अविस्मरणीय छथि। एहिना लघु भूमिकामे रहितो मोलहाकुरक पितिऔत भाइक पत्नी, एहिना लघु ओ सामाजिक परिस्थितिक दृष्टिएँ पितिऔत परेखमनि अनुभवक गाम्भीर्य, यथार्थपरक दृष्टिकोण ओ मुखर विचार सँ सम्पन्न नारी छथि। ओ अपन एक गोट मार्मिक उक्ति 'जाति लै क की बो यो चाटब? हमतँ पंजिबद्ध छियाक घरमे देलि गेलि छलहुँ। आइ अहाँक द्वारि अगोरने छी।' द्वारा मिथिलाक नारी-वर्गक दुर्दशाक समस्त इतिहास कहि दैत छथि। कलावती सज्ञान, शीलवती ओ पतिक आज्ञाकारिणी छथि। विराजमानिक कन्या सुवाक चरित्रकेँ प्रस्फुटित

शोषणक प्रचुर संभावना होइतो हुनका एकर अवसर नहि भेटैत छनि। सुधाक पति शशिकान्तकेँ ओहेन अवसर अवश्य भेटैत छनि। शशिकान्तक माय ललितरानी, बहीन सत्यभामा ओ सुनन्दाकेँ कथानकक अनुकूल चरित्र-विकासक उपयुक्त अंश प्राप्त भेल छनि।

एहि उपन्यासमे ओहन अवसरक वर्णन विशेष मनोयोग ओ चित्रमयताक संग कयल गेल अछि जकर वर्णन जनार्दन झाक पूर्व रचित उपन्यासमे नहि भेल छल वा अल्प भेल छल। जतय प्रसंगक पुनरावृत्ति भेल अछि ततहु वर्णन अभिनवत्वपूर्ण अछि। एहि उपन्यासोमे सेहो विवाहेक प्रसंग अछि मुदा से घटकथा द्वारा ओकर संपादन होइछ। घटकथामे कन्यागतक स्वागत-सत्कारक विस्तृत मनोरम वर्णन अछि। कन्याक व्यवस्था-निर्धारणक जीवन्त वर्णन अछि। एहि सँ इतर परिछनि, विवाह, चतुर्थी ओ द्विरागमनक बरियातीक स्वागत-सत्कार, मार-दोर, बेटीक विदागरी इत्यादिक वर्णन आकर्षक भेल अछि। एहि वर्णन सबसँ कथानकमे रंजकता आयल अछि, ततबहि नहि। अनेक स्थल पर ओ कथानक-विकासमे ओ चरित्र-रंजनामे अत्यन्त सहायक होइत अछि। एहि दृष्टिएँ उदाहरणार्थ एकटा प्रसंग देखल जाय।

चतुर्थीक व्युत्पन्न भार देखि कुसुमपुरक लोककेँ आश्चर्य होइछ जे नव फैशनक साड़ी सब कतयसँ कीनि कय विराजमनि पुतहुकेँ पठौलनि। एहि ठाम उपन्यासकार एकर रहस्यक उद्घाटन एहि रूपक वर्णन द्वारा करैत छथि—

'विधना ई छैक जे ज्योतिषी बुद्धिनाथ झा कलकत्तासँ जखन गाम आबय लागथि तखन सेहानी सभ हुनका गृहिणीक लेल साड़ी, चूड़ी, बिन्दी, ब्लाउज, अधबाँही आदि दैन्ह। सभ बेर दस-पाँचटा कीमती साड़ी ओ अनैत छलाह। जकरा हुनक स्त्री विराजमनि बड़ हिफाजतिसँ पेटीमे बन्द कय राखि दैत छलीह और मामूली साड़ी पहिरथि। केवल कोनो पर्व-त्योहारमे पेटीसँ सोनक योग्य साड़ी और सोनक गहना बहार कै पहिरथि। पुनः ओरिया क पेटीमे राखि देथि। बेटी-पुतहु लेल नीक नीक साड़ी पेटीमे भरि क रखने छलथिन, हुनका जे रंग-बिरंगक साड़ी सभ जाहि दिनक राखल छैन्ह से टोलमे ककरो जनलो नहि छलैक।... जँ ओ साड़ी सभकेँ देखय दितथिन्ह तँ काज-प्रयोजनमे पहिरय लेल टोलक धरकट्टी सभ मँगितैन्ह। नहि दितथिन्ह त मुँह फुलबितैन्ह। कतेक पड़ोसिन पैंच मँगितैन्ह, परन्तु बदलामे दितैन्ह एहने ओहन साड़ी। तेँ ओ कहियो ककरो देखय नहि देलथिन्ह। नुआ सभकेँ रौद देखबाक होइन्ह तँ अगुआड़-पछुआड़ दुहू दिसक केबाड़ बन्द कै क सुखाबथि। आङनक कमैनिहारिनिओकेँ कहियो सभ वस्त्र देखबाक अवसर नहि देलथिन्ह। केवल कन्या ओ तीनू बालककेँ जानल रहैन्ह। हुनका लोकनिकेँ बुझा क कहि देने छलथिन्ह जे कतहु बाजीजनु।'

संवादक दृष्टिएँ देखल जाय तँ एहू ठाम 'पुनर्विवाह' सदृश विराजमनि, महावीर ओ घटक भिखारी झाक दीर्घ संवादसँ उपन्यासक आरम्भ होइछ जाहिमे कथानकक पूर्वपीठिकाक परिचय देल जाइछ। जे बात सब एहि तीनू पात्रक द्वारा कहबाओल जाइछ, से लेखकीय वर्णन द्वारा सेहो सम्पादित भए सकैत छल, आ सेह नीक होइत। एहि सँ इतर सर्वत्र छोट-छोट, प्रसंगोपयुक्त ओ अर्थपूर्ण संवादक प्रयोग भेल अछि जे कथा-विकास ओ चरित्र-वैशिष्ट्यकेँ व्यंजित-रंजित करबामे सहायक होइत अछि।

जाति, वंश, कुलीनता ओ मर्यादाक प्रति सामाजिक व्यामोह तथा एहि नाम पर वर्ग विशेष द्वारा शोषण-दोहन, कन्याकेँ मानव नहि भोग्य वस्तु मानि ओकर मूल्य-निर्धारण करब, कन्याक जीवनक सुख-दुःखक

उत्तरदायित्वक प्रति स्वार्थपूर्ण उदासीनता-उपेक्षा, आत्मीयताक स्थानमे जमायसँ सम्बन्धीलोक संग व्यावसायिक चातुर्य ओ शाठ्यपूर्ण व्यवहार इत्यादि सामाजिक विकृतिक उपहास-आलोचनामे लेखक अत्यन्त साहस ओ मुखरताक परिचय दैत छथि। सामाजिक परिवर्तनमे शिक्षाक महत्व, संस्कृत शिक्षाक महत्वक प्रति ह्रासोन्मुख समाज-दृष्टि, आधुनिक शिक्षाक प्रति उन्मुखताक अतिरेकक संगहि लेखकक नारी-शिक्षाक प्रति अतिशय आवेशक सहज प्रतीति एहि उपन्यासमे देखल जाइछ। से एही तथ्य सँ स्पष्ट होइत अछि जे 'द्विरागमन रहस्य'क प्राय: समग्र स्त्री-पात्र किछु ने किछु अवश्य पढ़ल लिखल जनैत अछि।

एतावता उपन्यासक कथानकक रोचक संघटना, विश्वसनीय चरित्र-चित्रण, प्रभावी संवाद-योजना, चित्ताकर्षक वर्णन-विन्यास, सामाजिक सुधार-दृष्टि इत्यादि तत्वक सम्यक् ओ कलात्मक समन्वयक दृष्टिएँ 'द्विरागमन रहस्य' जनार्दन झा 'जनसीदन'क सफलतम उपन्यास मानल जा सकैत अछि।

रामदेव झा

कबिलपुर
लहेरियासराय
दरभंगा
846001